

Second Aryabhata Memorial Oration held

● OUR STAFF REPORTER

Indore

Second Aryabhata Memorial Oration was held at a city-based college on Tuesday. Lecture was delivered by Padma Bhushan Dr K Radhakrishnan, an eminent space scientist and former chairman of Indian Space Research Organisation (ISRO). The first oration was delivered by



Padma Vibhushan Anil Kakodkar on August 10, 2016. The speaker addressed the gathering on topic 'India's Strides in Space Exploration: Mangalyan and Beyond'. Dr Radhakrishnan, the man behind successful Mars mission, said that India has been commendably riding wings of space technology and people-centric applications for over five decades.



कम संसाधन में भी मंगलयान मिशन को बनाया कामयाब



वैष्णव विद्यापीठ विवि में इसरो के पूर्व चेयरमैन डॉ. राधाकृष्णन का व्याख्यान

पत्रिका @ इंदौर • भारत के मंगलयान मिशन की कामयाबी ने विश्व में भारत का मान बढ़ाया है और वह महाशक्तियों की बराबरी कर पाया है। ये कहना है मंगलयान मिशन के संचालक रहे इंडियन स्पेस रिसर्च ऑर्गनाइजेशन यानी इसरो के पूर्व चेयरमैन पद्मभूषण डॉ. राधाकृष्णन का। ह मंगलवार को वैष्णव विद्यापीठ विश्वविद्यालय में आयोजित द्वितीय आर्यभट्ट स्मृति व्याख्यान में बतौर मुख्य वक्ता संबोधित कर रहे थे। उनका विषय था इंडियन स्ट्राइड मंगल यान एंड बियॉन्ड। उन्होंने कहा कि मंगलयान मिशन इसरो के लिए बेहद महत्वपूर्ण चैलेंज था। चैलेंज बड़ा इसलिए था कि हमारे पास कम संसाधन, कम मैन पावर के साथ समय भी कम था, लेकिन हमारे वैज्ञानिकों की मेहनत के कारण हम कामयाब हुए। इसरो अब अमरीका के नासा, यूरोपियन स्पेस एजेंसी, रूस, जापान और चीन के बाद छठे नंबर की स्पेस एजेंसी बन गया है। ये बड़ी

उपलब्धि है। इसरो नासा के साथ मिल कर काम कर रहा है। भारत के 42 सेंटेलाइट स्पेस में है और नए सेंटेलाइट लॉन्च करने का काम 2010 तक चलेगा। उन्होंने कहा कि इसरो का महत्वपूर्ण काम ये है कि उसने जनमुखी प्रोजेक्ट किए हैं। इसरो ने देश की अंतरिक्ष आधारित रणनीतिक क्षमता को बढ़ाया और अंतरिक्ष मिशन में अभूतपूर्व वृद्धि हासिल की।

कार्यक्रम के प्रारंभ में कोआर्डिनेटर डॉ. उत्तम शर्मा ने डॉ. राधाकृष्णन का परिचय दिया। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. उषेंदर धर ने श्री वैष्णव विद्यापीठ विश्वविद्यालय की यात्रा के बारे में संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि देश को वैज्ञानिकों की जरूरत है और जब तक हम साइंस में नया ज्ञान नहीं खोजेंगे तब तक लीडर नहीं बन पाएंगे। विज्ञान सभी विधाओं की मां के समान है। विश्वविद्यालय के कुलाधिपति पुरुषोत्तमदास पसारी ने कहा कि आज का युग विज्ञान का युग है। अंत में कमल नारायण भुराड़िया ने आधार माना।



इसरो के पूर्व अध्यक्ष डॉ. के. राधाकृष्णन ने शहर के युवाओं को संबोधित किया धरती से 15 लाख किलोमीटर दूर सूरज के पास पहली बार भेजेंगे सैटेलाइट

सिटी रिपोर्टर | इंदौर

'आज पूरी दुनिया की स्पेस कम्युनिटी इस उद्देश्य के साथ काम कर रही है कि किस तरह वे अंतरिक्ष के बारे में अपना नॉलेज बढ़ा सकें और साथ ही दूसरे ग्रहों को एक्सप्लोर या एक्सप्लॉइट कर सकें। यह मानव जाति की आज की जरूरतों के लिए नहीं, बल्कि 100 साल बाद की आवश्यकताओं के लिए किया जा रहा है। चंद्रमा पर हीलियम 3 बहुत मात्रा में है। यह न्यूक्लियर एनर्जी का अच्छा स्रोत है। चंद्रमा और मंगल के प्रीशिवियस रिसोर्सेस को किस तरह यहां लाया जा सकता है और उन्हें कैसे एनर्जी में कन्वर्ट किया जा सकता है, पूरी दुनिया सहित भारत भी इसी पर काम कर रहा है।

इसरो के पूर्व अध्यक्ष डॉ. के. राधाकृष्णन शहर के स्टूडेंट्स से रूबरू थे। वे वैष्णव विद्यापीठ विश्वविद्यालय के आवंभट्ट मेमोरियल ओरेशन में संबोधित कर रहे थे। उन्होंने बताया कि जल्द ही इसरो धरती से तकरीबन 15 लाख किलोमीटर दूर सूरज के पास एक सैटेलाइट स्थापित करेगा। 2020 में लॉन्च होने वाले इस कार्यक्रम को आदित्य एल 1 नाम दिया गया है। इस सैटेलाइट से वैज्ञानिक सूरज की सतह 'कोरोना' की स्टडी करेंगे। इसके अलावा चंद्रयान 2 और एस्ट्रोसेट भी आने वाले महत्वपूर्ण मिशन होंगे।

पांच साल में अंतरिक्ष में भेज सकते हैं मनुष्यों को



मानव को अंतरिक्ष में भेजना अब हमारी क्षमताओं से परे नहीं, लेकिन भेजे जाने वाले दल को वापस धरती पर या समुद्र में सुरक्षित उतारना बड़ी जिम्मेदारी है। इसके लिए हमें एक भरोसेमंद सिस्टम तैयार करना होगा। पिछले 10 सालों में हमने कई स्टडी की हैं जो इसके लिए जरूरी हैं। इसरो जल्द ही एक टेस्ट करेगा जो रहा है जिसे पेड अबॉर्ट टेस्ट कहते हैं।

यह रॉकेट लॉन्च के समय होने वाले समस्या के दौरान अंतरिक्ष यात्रियों को बचाने का टेस्ट है। 2007 में इसरो स्पेस केम्पून रिकवरी प्रोग्राम सफलतापूर्वक पूरा कर चुका है। इसमें अंतरिक्ष में भेजे गए यान को वापस सुरक्षित उतारने का प्रयास किया गया था। इसके अलावा अंतरिक्ष में भेजे गए दल के लिए रॉकेट में उचित पर्यावरण बनाना, लॉन्च

व्हीकल को अपग्रेड करना। ऐसी कई चीजें हैं जो ह्यूमन स्पेस प्लाइट के पहले हमें तैयार करना होगा। सबसे जरूरी यह है कि देश यदि महसूस करता है कि हमें अंतरिक्ष में मानव को भेजने की जरूरत है तो इसरो इसमें पूरी तरह सहमत है। सरकार की सहमति मिलने के पांच से छः साल के भीतर यह पूरा किया जा सकता है।

इंडियंस आर फॉलोइंग इनसेन शेड्यूल

इसरो का मंगलयान अभियान कई मायनों में चुनौती था। सबसे बड़ा चैलेंज इसका शेड्यूल था। 2010 में हमारा मंगलयान प्रोग्राम सिर्फ कागजों में था। 2012 अगस्त में प्रधानमंत्री ने घोषणा की थी कि भारत मंगल मिशन लॉन्च करेगा। आप यदि मंगल, धरती और सूर्य की स्थिति देखें तो 26 महीनों में

एक ही मौका आता है जब आप रॉकेट लॉन्च करेंगे, तो ही वो मंगल तक पहुंचेगा। प्रधानमंत्री की घोषणा के बाद हमारे पास सिर्फ एक साल का समय था जिसमें हमें स्पेसक्राफ्ट तैयार कर उसे असेम्बल भी करना था। जब हमारे प्रधानमंत्री इस कार्यक्रम की घोषणा कर रहे थे तब नासा वो

सारी मशीनें तैयार कर चुका था जो वो मंगल पर हमारे माध्यम से भेजना चाहते थे और हमें काम शुरू करना था। इस शेड्यूल के बारे में यूनाइटेड किंगडम के एक ब्लॉग पर लिखा गया था। इंडियंस आर फॉलोइंग इनसेन शेड्यूल फॉर मार्स मिशन लेकिन इसरो की टीम ने इसे तय समय में कर दिखाया।